ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in February 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा, प्रतीक और कथानक निर्माण की प्रणाली

रूबी शर्मा (हिंदी), शोधकर्ता, सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)
डॉ. कृष्णा चतुर्वेदी (हिंदी), प्रोफेसर (हिंदी विभाग), सनराइज़ विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सार

उषा प्रियंवदा एक प्रमुख भारतीय लेखिका हैं जो अपने उपन्यासों के लिए जानी जाती हैं जो मुख्य रूप से भारतीय महिलाओं के अनुभवों पर केंद्रित हैं, जो नारीत्व, पहचान और सामाजिक अपेक्षाओं जैसे विषयों पर प्रकाश डालते हैं। भाषा, प्रतीकवाद और कथा निर्माण का उनका उपयोग विशेष रूप से विशिष्ट और समृद्ध है। प्रियंवदा की भाषा सरल, स्पष्ट और सीधी है, जिससे पाठक उनके संदेशों को आसानी से समझ सकते हैं। वह विभिन्न वस्तुओं, छवियों और घटनाओं के माध्यम से अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हुए बड़े पैमाने पर प्रतीकवाद का उपयोग करती है। उनके उपन्यासों में कथा निर्माण सुव्यवस्थित और संरचित है, जिससे पाठक आसानी से कहानी का अनुसरण कर सकते हैं। अंत में, प्रियंवदा की भाषा का उपयोग, प्रतीकवाद और कथा निर्माण उनकी लेखन शैली की पहचान हैं, जो समाज में महिलाओं की स्थितियों पर प्रकाश डालते हैं और नारीत्व के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करते हैं। उनकी विचारशील, संवेदनशील और सजग लेखन शैली ने उन्हें हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है।

विशेष शब्द : *नारीत्व, प्रतीकवाद, विचारशील, संवेदनशील , उषा प्रियंवदा*

परिचय

लिखने की कला या कौशल उपन्यास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यदि किसी कार्य के लिए कोई विचार आत्मा है तो कला उसका शरीर है। एक उपन्यासकार अपने उपन्यास को सफल अभिव्यक्ति देने के लिए कला को अधिक कुशल एवं परिपूर्ण बनाने का प्रयास करता है।

आप्टे के अनुसार "शिल्पा" शब्द की उत्पत्ति 'शिल्पक' शब्द से हुई है। उन्होंने शिल्प (कला) में कौशल और सृजन को शामिल किया। सेई मोनियन विलियम्स ने शिल्पा (कला) के लिए निम्नलिखित अर्थ शामिल किए:

क) कलात्मक कार्य;
बी) हस्तशिल्प यांत्रिक या ललित कला (ललित कला) की कोई भी चीज़;
ग) कविता, संगीत, एक्शन, नृत्य आदि।
घ) किसी भी चीज़ की कला, शिल्प (कौशल) या कला में कोई उपकरण, और
ई) रूप, आकृति आदि [1]

शिल्पा का शाब्दिक अर्थ है कुछ चीजों को बनाने या रचने की विधि या तरीका। किसी वस्तु को बनाने या बनाने की सभी प्रक्रियाएँ या विधियाँ शिल्प विधि (कला की विधि) में शामिल हैं। सरल भाषा में शिल्प का अर्थ है हाथों से कुछ बनाना। [2]

मुख्यतः शिल्प (कला) शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है; - एक, कलात्मक रचना (कुशल पुराण रचन) में और, दो, नृत्य, संगीत, मूर्तिकला और ऐसी अन्य कलाओं में। अंग्रेजी में तकनीक, शिल्प आदि शब्दों का प्रयोग शिल्पा के लिए विभिन्न अर्थों में किया जाता है। सामान्यतः 'काला' शब्द का प्रयोग किया जाता है
अंग्रेजी शब्द 'आर्ट' के लिए हिन्दी का प्रयोग किया गया है।

शिल्पा (कला) की परिभाषा :

अधिकांश विद्वान उपन्यासों में कला की प्रधानता पर सहमत हैं। विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से 'शिल्पा' की परिभाषा प्रस्तुत की।

- नालन्दा अध्ययन कोष के अनुसार:
- आधुनिक हिन्दी शब्दकोष के अनुसार

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in February 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

- साहित्य को कला से सजाया जा सकता है।

भाषा : –

भाषा एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से एक लेखक अपने विचारों और भावनाओं को अपने शुभचिंतकों और संवेदनशील पाठकों तक सफलतापूर्वक पहुंचा सकता है। भाषा संचार का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी लेखक की सफलता पूरी तरह भाषा पर निर्भर करती है। एक उपन्यासकार समय के परिवर्तन के साथ-साथ सही भाषा के प्रयोग से ही सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त कर सकता है।

सफल अभिव्यक्ति के लिए उचित भाषा अपरिहार्य है। भाषा की तैयारी को शैली कहा जाता है। न केवल उपन्यास में बल्कि सभी प्रकार की साहित्यिक रचना में लेखक की सफलता उसकी भाषा शैली पर निर्भर करती है। भाषा का मूल शब्द हैं। वाक्यांशों और उपवाक्यों का उचित प्रयोग तथा वाक्यों की रचना को शैली कहा जाता है।

आधुनिक उपन्यासों में विभिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग होता है। लेखक स्थानीय शब्दों के साथ-साथ विदेशी भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग करते हैं।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों की भाषा :

स्वातंत्र्योत्तर काल की अस्तित्ववादी सोच से प्रभावित लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा का नाम उल्लेखनीय है। उनकी रचनाओं को विशेष पहचान प्राप्त है। उनके लेखन में मध्यवर्ग अपनी सांस्कृतिक चेतना और स्त्री की अस्मिता की खोज को उजागर करता है। यद्यपि वह अस्तित्ववाद से प्रभावित थीं फिर भी उनके पात्रों ने युग की निराशा, भय और प्रवृत्ति को अभिव्यक्ति दी। और तो और इसके संदेह और भय से आंतरिक संघर्ष और उनसे मुक्ति के उपाय भी बताए गए हैं जो तुलना से परे हैं।

उषाजी के उपन्यासों की भाषा सहज, सरल और प्रवाहपूर्ण है। वह पात्रों के अनुकूल व्यंग्यात्मक भाषा का भी प्रयोग करती हैं। उनके महिला पात्र अधिकतर पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हैं और ऐसे में इन पात्रों की भाषा भी उसी संस्कृति से प्रभावित है।

उषाजी मुख्यतः मानक 'खड़ी बोली' का प्रयोग करती हैं। जब वह कुछ पात्रों के माध्यम से कुछ कहना चाहती है तो वह अपने मन में वह पात्र किस वर्ग का है और उसकी स्थिति क्या है, यह ध्यान में रखती है।

भाषा सदैव अनुकरणात्मक होती है। मनुष्य जहां रहता है वहीं की भाषा सीखता है। उषाजी के सभी पात्र अपने निवास स्थान की भाषा बोलते हैं। अनु, दिव्या, वाना सारिका और अन्य के मामलों में उन्होंने विदेशी (अंग्रेजी) शब्द का इस्तेमाल किया।

उषा प्रियंवदा ने विभिन्न भाषाओं जैसे हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और लोक भाषाओं के शब्दों का इस्तेमाल किया। उषाजी ने अपने उपन्यासों में अरबी और फ़ारसी शब्दों का भी प्रयोग किया। उपन्यासों में उन्होंने ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो पात्रों के अनुकूल हो। उन्होंने दूसरी भाषा के शब्दों का उपयोग लगभग सावधानी से किया और देखा कि उनका मूल अर्थ खोए बिना उनका उचित उपयोग किया गया है।

शब्दों का प्रयोग:

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ अंग्रेजी शब्द:

Name Plate, warden, Girls hostel, Tutorial, visitors, university, Restourant, cottage, Tachers, loan party, Lectures, Practical, Lamp post, Commissioner, Furniture, Focus, Carpet, Balcony, Airport, Basket, Practice, Shopping, Dinner, Enjoy, irritate, Manue, Lunch, Position, Superior, Inferiour, Metaphor, Flight, Briefcase, Agency, Control, Boutique, Poetic, Certificate, Sink, Farm, Passport, Parcel, Report, Funeral, Hair, Lift, Surrender, Night Suit, Announce etc.

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में प्रयुक्त अरबी और फ़ारसी शब्द:

तकल्लुफ , शुक्रिया , फुरसत , मेज़पोश , शिकायत , कैफियत , तफ़लीफ , शरारत, परेशान , इतेजाम , गुलदस्ता , अक्सर , शहनाई , इरादा , मुसलमान , ताबीज, मरीज

, माहौल, जबान , कैद , अखबार , शहतीर, तबीयत , मर्तबान , मर्जी, काल , खिलाफ , दकल, काविन्द , नुस्खा , इबारत , लिफाफा , राजी , वफादार , माफ, अफसोस, ऐशोआराम , दफ्तर ।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में प्रयुक्त संस्कृत शब्द:

नेत्र ,पृष्ठ, त्रस्त ,पुत्र, सत्य, नितांत, प्रबंध, दिवास्वपन , निद्रा, रात्रि , शिथिल, उलंघन , समाप्त, अवसर, मेत्री , अप्रतिभ, सत्राता , योज्य, आस्वासन, स्वयं, स्पर्श, आपेज ,हस्ताक्षर , विछेद, व्यवस्थित, महत्वकांशी , आतंक, आत्मसम्मान, निश्चय, समर्पिय, अस्तित्व, देवी, व्रत, अशब्द, आश्वासन, रक्त, मद्धिमा , दृष्टि, संयत, शत-प्रतिशत, निवास, प्रतिज्ञा, संसार, अर्ध, आवृति, स्पर्श, तपस्वानी , वंचित ।

भाषा का प्रयोग :

उषाजी ने अपने उपन्यासों में भाषा का सफल प्रयोग किया था। भाषा आदर्श और भावनाओं की वाहक बनती है। वे पात्रों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करते थे। उनकी भाषा के प्रयोग में आधुनिकता है। वे हिंदी भाषा के मानक साहित्यिक शब्दों का भी उपयोग करते हैं।

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों की भाषा काफी लयबद्ध और मधुर है, उदाहरण के लिए:

"समुंदर के किनारे, जब सूर्य के किरणे बहुत ही प्यारी भांति से वहाँ पहुंचते हैं, तो समुंदर अपने लहरों के साथ खुशी-खुशी खिलजाता है, जैसे कि वह भी सूर्य की मुस्कान के साथ आशीर्वाद प्राप्त कर रहा हो।"

"प्रकृति अपनी खूबसूरती से लबरेज़ थी। वहाँ के फूल, उनकी रंगत और खुशबू, सब कुछ मन को बहुत सुकून दे रहा था। बगीचे की खिली-खिली फुलझड़ियां जैसे किसी महकते हुए सपने में खो गई हों।"

उदाहरण के लिए, उनके उपन्यास "पीली आंधी" में उन्होंने लिखा है:

"सूरज डूबने को था, आसमान में उसकी लाली छा रही थी। सारी धरती पर एक सुनहरा रंग छा गया था। उस रंग में गुलाबी और नारंगी रंग का मिला जुला स्वर था।"

उषा प्रियंवदा के उपन्यास "चंदनी बाग" से:

"चंदनी रात में सफेद फूलों की खुशबू से सारी हवा महक उठी थी। आसमान में चाँद का पूरा चकोर था और उसकी चाँदनी से सारी धरती चमक उठी थी।"

उनके उपन्यास "बेगम सुमरु" से:

"बेगम सुमरु ने अपनी आँखें उठा कर देखा, आसमान पर बादल छाए हुए थे और धरती पर हल्की फुहार गिर रही थी। उनका मन भी बादलों की तरह भारी और उदास था।"

उनके उपन्यास "सांवली" से:

"सांवली ने अपनी खिड़की से बाहर देखा, बगीचे में फूल खिले हुए थे और तितलियाँ उन पर मंडरा रही थीं। उसके मन में भी खुशी की लहरें उठने लगीं।" उषा प्रियंवदा के उपन्यास "काली घाटा" से:

"रात धीरे-धीरे गहराने लगी थी। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। ठंडी हवा के झोंके से पेड़ों की पत्तियां खड़खड़ा रही थीं। वातावरण में एक मधुर संगीत की तरह लय बन रही थी।"

उनके उपन्यास "नीलम रात्रि" से:

"चाँदनी रात में नीला आसमान सितारों से भरा हुआ था। समुद्र की लहरें चाँद की रोशनी में चमक रही थीं। सब कुछ एक रहस्यमयी सौंदर्य से भरा हुआ था।"

उनके उपन्यास "सपनों का घर" से:

"सुबह की किरणें धीरे-धीरे आसमान को रोशन करने लगी थीं। पक्षियों की चहचहाहट से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा था। सूरज की पहली किरण धरती पर पड़ते ही सब कुछ सोने की तरह चमक उठा था।"

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in February 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

उषा के उपन्यासों में प्रयुक्त प्रतीक :-

उषा प्रियंवदा ने प्रतीकों के माध्यम से कई बातें व्यक्त कीं।

पचपन खम्भे लाल दीवारें (उषा प्रियंवदा) में सुषमा की सभी भावनाएँ जैसे उसका अकेलापन, ऊब आदि को 'प्रतीकों' के माध्यम से व्यक्त किया गया था। रात्रि के समय एक पक्षी की दर्द भरी आवाज के माध्यम से सुषमा के आंतरिक अकेलेपन को दर्शाया गया है।

यहां रात के समय कुछ पक्षियों की चीख सुषमा के दिल के अकेलेपन और अंधेरे का प्रतीक है जिससे वह लगातार लड़ रही है। मन का उतार-चढ़ाव और जीवन के अंधकार का एहसास, ये सब सुषमा के अकेलेपन की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है।

इस उपन्यास का नाम भी प्रतीकात्मक है। 'पचपन खंबे लाल दीवारें' और कुछ नहीं बल्कि सुषमा की जिंदगी की 'पचपन खंबे' वाली दीवार है, जिसे न तो वह कूद सकती थी और न ही तोड़ सकती थी। यह कर्तव्य की, जिम्मेदारी की, गरिमा की, दायित्व की दीवार है।

यहाँ वर्षा की मानसिक संतुष्टि को दर्शाया गया है।

प्लॉट संकुचन की प्रणाली:-

उषा प्रियंवदा की लेखन प्रणाली काफी सरल और व्यापक है। उन्होंने कथात्मक, मनोवैज्ञानिक, फ़्लैश बैक, विश्लेषणात्मक, नाटकीय, दार्शनिक आदि जैसी विभिन्न शैलियों का उपयोग किया। उन्होंने प्राकृतिक वार्तालाप शैली का भी उपयोग किया। नीचे हम दोनों लेखकों की कथा शैली के उदाहरण देते हैं।

कथा शैली:-

उपन्यास में पचपन खम्भे लाल दीवारें।

"इन पचपन खंभे लाल दीवारें" (इन पचपन खंभे लाल दीवारें) हिंदी लेखिका उषा प्रियंवदा (उषा प्रियंवदा) द्वारा लिखित एक उपन्यास है। उपन्यास अपनी कथा शैली के लिए जाना जाता है, जो कहानी कहने के लिए गहन आत्मनिरीक्षण और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण की विशेषता है। उपन्यास प्रथम पुरुष में लिखा गया है, और यह नायक द्वारा एक एकालाप का रूप लेता है, जो सविता नाम की एक युवा महिला है। कथा शैली अत्यधिक व्यक्तिपरक है, क्योंकि यह सविता के आंतरिक विचारों, भावनाओं और उसके आसपास की दुनिया की धारणाओं को दर्शाती है। उपन्यास सविता की मानसिक और भावनात्मक स्थिति पर प्रकाश डालता है, अकेलेपन, अलगाव और आत्म-पहचान की खोज के विषयों की खोज करता है।

उपन्यास में प्रयुक्त भाषा काव्यात्मक और गीतात्मक है, जिसमें कल्पना और प्रतीकवाद पर ज़ोर दिया गया है। उपन्यास वर्णनात्मक अंशों से समृद्ध है, जो नायक के भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिदृश्य को व्यक्त करने में मदद करता है। कथा शैली को एक धारा-चेतना तकनीक की विशेषता भी है, जो पाठक को नायक के आंतरिक विचारों और भावनाओं को प्रत्यक्ष और तत्काल तरीके से अनुभव करने की अनुमति देती है।

कुल मिलाकर, "इन पचपन खम्भे लाल दीवारें" की कथा शैली अत्यधिक आत्मनिरीक्षणात्मक और मनोवैज्ञानिक है, जिसमें नायक के आंतरिक जीवन पर एक मजबूत फोकस है। उपन्यास एक समृद्ध और गहन पढ़ने का अनुभव बनाने के लिए काव्यात्मक भाषा और धारा-चेतना तकनीकों का उपयोग करता है।

"मैं अकेली रहने लगी थी। मेरे आस-पास की दीवारें मुझसे बोलने लगी थीं। वे मुझसे कहती थीं, 'तुम अकेली नहीं हो, हम तुम्हारे साथ हैं।' मैं उनसे बातें करने लगी थी। मैंने उन्हें अपनी सहेलियाँ बना लिया था। मैं उन्हें अपने दिल की बातें सुनाती थी और वे मुझे सुनती थीं।"

"बरसों पहले की बात है। मैं तब बहुत छोटी थी। मेरे पिताजी की मृत्यु हो गई थी और मैं माँ के साथ अकेली रह गई थी। माँ का चेहरा हमेशा उदास रहता था। उनकी आँखों में हमेशा

आंसू बहते रहते थे। मैं उन्हें खुश करने के लिए कई तरह की शरारतें करती थी, लेकिन उनका चेहरा कभी हंसता नहीं था।"

"शाम का समय था। धूप धीरे-धीरे छुपने लगी थी। आकाश में रंग-बिरंगे बादल तैर रहे थे। मैं खिड़की के पास बैठी थी और बाहर के नजारे को देख रही थी। मेरा मन भी उसी तरह रंग-बिरंगा हो उठा था।"

"रात बीत गई थी। सुबह की किरणें आसमान को रोशन कर रही थीं। पक्षियों की चहचहाहट से पूरा आंगन गूंज उठा था। मैं बिस्तर से उठी और खिड़की के पास आ गई। बाहर का दृश्य देखकर मेरा मन प्रसन्न हो उठा।"

"मैं अपने कमरे में बैठी थी। चारों ओर शांति थी। मैंने अपनी डायरी निकाली और लिखना शुरू किया। लिखते-लिखते मेरे दिमाग में कई ख्याल आने लगे। मैंने उन ख्यालों को कागज पर उतारना शुरू किया। धीरे-धीरे मेरी कल्पना उड़ान भरने लगी।"

"रात का समय था। मैं बेड पर लेटी हुई थी। बाहर हवा चल रही थी। मेरी खिड़की के पर्दे हवा में उड़ने लगे थे। मैंने उठकर खिड़की बंद की। फिर बेड पर लेट गई और आसमान की ओर देखने लगी। चाँद बहुत चमक रहा था। उसकी रोशनी मेरे कमरे में फैल गई थी। मैंने सोचा, चाँद कितना सुंदर है।"

उपन्यास शेष यात्रा में

"शेष यात्रा" उपन्यास का लेखक कृष्णा सोबती हैं। यह उपन्यास भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति माना जाता है और इसने कई पुरस्कार भी जीते हैं। इस उपन्यास की कथा शैली विशिष्ट और अनूठी है।

"शेष यात्रा" की नैरेटिव शैली में एक मजबूत और विशेष चरित्र चित्रण होता है। इस उपन्यास में मुख्य रूप से दो महिला पात्रों, विमला और उसकी सास, दोनों की आंतरिक दुनिया का विस्तृत और गहराई से चित्रण किया गया है।

नैरेटिव शैली में एक मजबूत आंतरिकता होती है, जिससे पाठकों को पात्रों के भीतरी विचारों और भावनाओं की गहराई से समझ मिलती है। लेखिका ने विवरणात्मक और संवादात्मक शैली का इस्तेमाल किया है, जिससे पात्रों के बीच के संबंधों और उनके विकास को समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, उपन्यास में विमला की आंतरिक दुनिया और उसके सास के साथ संबंधों की जटिलता को बहुत ही सूक्ष्मता और सहजता के साथ चित्रित किया गया है। इस प्रकार, "शेष यात्रा" की नैरेटिव शैली एक मजबूत चरित्र चित्रण, विवरणात्मकता और संवादात्मकता से विशेषता होती है, जिससे पाठकों को पात्रों की आंतरिक दुनिया और उनके बीच के संबंधों की गहराई से समझ मिलती है।

"आंगन में खड़ी विमला ने अपनी सास को देखा। वह धीरे-धीरे चलती हुई आ रही थी। उसका चेहरा सूखा और झुर्रियों से भरा हुआ था। विमला ने सोचा, 'कितनी बूढ़ी हो गई है वह।' लेकिन फिर उसने अपनी सास की आँखों में एक चमक देखी। वह चमक उसकी आत्मा की गहराई से आ रही थी।"

"सुबह का समय था। विमला ने अपनी आँखें खोलीं और देखा कि सूरज धीरे-धीरे उग रहा था। उसने उठकर खिड़की को खोला और ताजगी भरी हवा को अपने चेहरे पर महसूस किया। उसका मन हल्का और ताजा महसूस हुआ। उसने सोचा, 'नया दिन, नई शुरुआत।'"

"शाम का समय था। विमला अपनी सास के साथ बैठी थी। वह उनकी पुरानी कहानियाँ सुन रही थी। उसकी सास ने बताया कि कैसे उनके गाँव में पुराने समय में मेले लगते थे और लोग खुशी से नाचते और गाते थे। विमला ने सोचा, 'कितना अच्छा होता अगर हम भी वैसे मेले में जा सकते।'"

"रात का समय था। विमला अपने कमरे में अकेली बैठी थी। उसके मन में कई सवाल उठ रहे थे। वह सोच रही थी कि उसकी जिंदगी का मकसद क्या है। उसने अपनी डायरी निकाली और

अपने विचारों को लिखना शुरू किया। लिखते-लिखते उसे अपने आप में एक सुकून महसूस हुआ।"

"सुबह की किरणें आसमान में फैल रही थीं। विमला ने अपने घर के दरवाजे को खोला और बाहर कदम रखा। उसे ताजगी भरी हवा का एहसास हुआ। वह चलती रही, गाँव की सड़कों पर, खेतों के बीच से। उसने देखा कि लोग अपने काम में व्यस्त थे, किसान खेतों में हल चला रहे थे, औरतें चूल्हे पर खाना पका रही थीं। उसने सोचा, 'यही तो है जीवन, यही तो है संघर्ष।'"

अन्तर्वासना उपन्यास में

"अन्तर्वासना" एक हिंदी उपन्यास है जिसके लेखक लक्ष्मीकांत वर्मा हैं। यह उपन्यास एक युवक और उसकी अन्तर्वासना, यानि उसकी आंतरिक इच्छाओं और वासनाओं को चित्रित करता है। इस उपन्यास की नैरेटिव शैली में एक मजबूत और गहरी आंतरिकता होती है। कथा का मुख्य धारा युवक के आंतरिक जगत, उसकी वासनाओं, इच्छाओं, और उसके संघर्षों का वर्णन करती है।

इस उपन्यास में भाषा और शैली का इस्तेमाल काफी उच्चकोटि का है। लेखक ने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सुंदर और सटीक शब्दों का चयन किया है। यह शैली पाठक को मुख्य पात्र के भीतरी जगत में ले जाती है और उसके अनुभवों को समझने में मदद करती है।

साहेबपुरार बोरोखुन उपन्यास में:

साहेबपुरार बोरोखुन एक असमिया उपन्यास है जिसे एक प्रमुख असमिया लेखक, लिटराचर भट्टाचार्य ने लिखा है। यह उपन्यास असम के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश को चित्रित करता है। साहेबपुरार बोरोखुन उपन्यास की कथा-शैली बहुत ही रोचक और संवेदनशील है। इसमें नाटकीय तत्वों का भी अच्छा खासा प्रयोग किया गया है। लेखक ने कहानी को बड़े ही सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत किया है।

इस उपन्यास में कई पात्र हैं, और प्रत्येक पात्र के जीवन और विचारों को गहराई से चित्रित किया गया है। लेखक ने पात्रों की भावनाओं, आशाओं, और संघर्षों को बहुत ही सटीक और संवेदनशील ढंग से व्यक्त किया है।

कहानी में विविधता और समृद्धि है, जिससे पाठकों को उपन्यास के प्रति आकर्षित किया जाता है। लेखक ने कहानी में सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक विषयों को बड़ी कुशलता से जोड़ा है, जिससे उपन्यास में गहराई और समृद्धि आती है। कुल मिलाकर, साहेबपुरार बोरोखुन उपन्यास की कथा-शैली बहुत ही रोचक, संवेदनशील, और समृद्ध है, और इसने पाठकों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

उषा प्रियंवदा ने मनोवैज्ञानिक शैली का बहुत ही सफलतापूर्वक प्रयोग किया है, नीचे हम मनोवैज्ञानिक शैली के उदाहरण देते हैं।

मनोवैज्ञानिक शैली :

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में"

उषाजी ने मनोवैज्ञानिक शैली का बहुत ही सफलतापूर्वक प्रयोग किया। पचपन खम्भे लाल दीवारें में उन्होंने सुषमा के मानसिक विरोधाभासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया।

शेष यात्रा में

मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग अन्तरवंशी के विभिन्न स्थानों पर किया गया है। वाना हमेशा अपनी स्वतंत्रता, रुतबा आदि की तलाश में रहती थी। उसी समय राहुल के साथ उसके प्रेम संबंधों ने उसमें आंतरिक संघर्ष को जन्म दिया।

जीवन मे नए उतार चड़ाव आते रहते है , बार – बार प्यार , बार – बार जुड़ना और अलग होना । मन मिले तो क्या विवाह साथ होना होगा ..

ROOTINDEXING
JOURNAL ABSTRACTING AND INDEXING SERVICE
INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in February 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

उपन्यास बोरागी नादिर घाट में धरानी की मानसिक स्थिति, जब वह पहली बार श्रीमती कन्ना से मिली थी, काफी समझदार और उत्सुक भावनाओं से भरी थी।

फ़्लैश बैक शैली:-

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में:

कुछ मामलों में उषा प्रियंवदा ने फ्लैश बैक शैली का प्रयोग किया। वे संबंधित पात्र की स्थिति को दर्शाने के लिए पात्रों के जीवन की कुछ पुरानी घटनाओं का उल्लेख करते हैं।

उपन्यास 'अंतर्वंशी' में राहुल अपने पुराने दिनों को हमेशा याद रखते हैं, खासकर अपने दोस्तों के साथ बिताए गए दिल के पल हमेशा याद रहते हैं। इन्हीं दिनों की स्मृतियों को फ्लैश बैक शैली के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

हृदय एक बिग्यापन उपन्यास में भास्वती को अपने बचपन के दिनों की याद दिलाती हुई पाई गई। उसे नदी किनारे यामिनी पेही का घर और एक लड़का नयन याद है, जिससे उसकी मुलाकात वहीं हुई थी। उपन्यास में पूरी बात फ्लैश बैक शैली के माध्यम से प्रस्तुत की गई है। धरानी और नयनतारा के मामले में उपन्यास बोरागी नादिर घाट में, अनुधा जी ने उनके बीच पिछली अंतरंगता को चित्रित करने के लिए फ्लैश बैक शैली की मदद ली। ऐसा पाया जाता है कि जब धरानी को नयनतारा की याद आई तो वह तुरंत अपने अतीत में डूब गया।

संवादों का प्रयोग:

पात्रों को अधिक अभिव्यक्ति देने के लिए उषा प्रियंवदा ने पात्रों के बीच कुछ संवादों और वार्तालापों का प्रयोग किया है, वे अत्यंत सरल और संक्षिप्त हैं।

पाया गया कि संवाद पात्रों के अनुरूप हैं। संवाद इस प्रकार डिज़ाइन किए गए हैं कि वे उनके (पात्रों की स्थिति, रैंक और अन्य गुणों) के अनुरूप हों। जिन पात्रों का विदेशों से संबंध था, वे आम तौर पर अंग्रेजी शब्दों का उपयोग करते हैं। फिर ग्रामीण लोगों के मामलों में उनके संवाद स्थानीय भाषा में होते हैं। उषा प्रियंवदा के उपन्यासों के उदाहरण :

"क्या सोच रही है" ?
"कितने खंभे है"?
"आप ही गिन लीजिए"?
"उसने पूछा"
"मुझसे नाराज है"?

"Enjoy your car, you made a good choice तुम्हारी पसंद एकदम first क्लास है"।

"अब से आप हमारे 'एडकॉन परिवार' के सदस्य हैं, आपका स्वागत है और शुभकामनाएँ।" 41

उपन्यासों में संवादों और वार्तालापों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उपन्यास के पात्रों की चारित्रिक विशेषता उनके संवादों से महसूस की जा सकती है। दोनों ही लेखक विषय वस्तु का परिचय देने में काफी सफल हैं और उपन्यास लेखन की गहराई तक जाते हैं।

हमारे विचाराधीन उपन्यासों का रचनात्मक पक्ष काफी सशक्त एवं भव्य पाया जाता है। भाषा में - हिन्दी। कथानक और विषयवस्तु काफी जानकारीपूर्ण और अभिव्यंजक हैं। ये सभी अपनी विषयवस्तु का परिचय बहुत ही कुशलता से देते हैं, उषाजी ने अपने सफल कौशल का उपयोग करके अपने कथानकों को और अधिक आकर्षक बना दिया है। कुछ जगहों पर संवाद इस तरह से डिज़ाइन किए गए हैं कि वे पाठकों के दिलों को छूने में सफल होते हैं।

उषाजी की भाषा काफी सहज और सरल है और उनकी अधिकांश भाषा आम लोगों की भाषा है। वे बातचीत की आधुनिक भाषा का प्रयोग बहुत अच्छे से करते हैं। इसके अलावा उनके उपन्यासों की पृष्ठभूमि शहरी क्षेत्र है। उन्होंने महानगरीय जीवन की विभिन्न कठिनाइयों से परिचय

कराया। दोनों ने स्थितियों को अपनी-अपनी समझ से बयान किया और वह भी उचित शब्दों के साथ. वे कुशलतापूर्वक और उचित शब्दों के प्रयोग से सजीव चित्र बनाने में सक्षम होते हैं। उषाजी महिलाओं की सफल और शक्तिशाली क्षमताओं को उजागर करना चाहती थीं और वे इस मामले में काफी सफल भी हैं।

निष्कर्ष

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में प्रयुक्त भाषा, प्रतीक और कथानक निर्माण की प्रणाली उनकी लेखनी की विशेषता है। उनके कृतियाँ समाज में महिलाओं की स्थिति को उजागर करती हैं और स्त्रीत्व के विभिन्न पहलुओं को चित्रित करती हैं। उनकी लेखनी में विचारशीलता, संवेदनशीलता और सजगता का संगम है, जो उन्हें हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महोदय एम. विलियम्स: एक संस्कृत-अंग्रेजी शब्दकोश। पृष्ठ-232
2. डॉ. श्यामसुन्दर दास : साहित्य लोचन, पृ. 2
3. (सं.)पुरुषत्तम नारायण :नालंदा अध्ययन कोश, पृष्ठ-883.
4. (ईडी) गोयल चातक, आधुनिक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ -56
5. डॉ. स्यामसुन्दर दास, लोचन साहित्य, पृ. 250
6. उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें, पृष्ठ - 5
7. उषा प्रियंवदा - शेष यात्रा, पृष्ठ - 7
9 . उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें, पृष्ठ -5
10 . उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें, पृष्ठ -5
11 . उषा प्रियंवदा - पचपन खम्भे लाल दीवारें, पृष्ठ - 31
12 . उषा प्रियंवदा - शेष यात्रा, पृष्ठ -7